अंधायुग

सूचना के अनुसार कृतियाँ करो [PAGE 41]

सूचना के अनुसार कृतियाँ करो | Q (१) १. | Page 41

कृति करो :

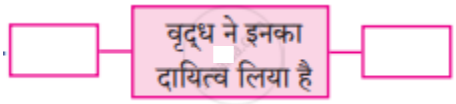

Solution: वृद्ध ने इनका दायित्व लिया है

१. संजय

२. युयुत्सु

३. अश्वत्थामा

सूचना के अनुसार कृतियाँ करो | Q (१) २. | Page 41

कृति करो :

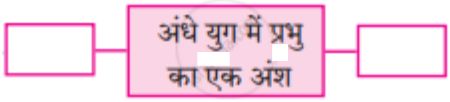

Solution: अंधे युग में प्रभु का एक अंश

१. निष्क्रिय रहेगा।

२. आत्मघाती रहेगा।

३. विगलित रहेगा।

सूचना के अनुसार कृतियाँ करो | Q (२) | Page 41

संजाल पूर्ण करो :

Solution: अश्वत्थामा के अनुसार नये अर्थ में व्यक्ति

१. विकृत

२. अर्द्धबर्बर

३. आत्मघाती

४. अनास्थामय

सूचना के अनुसार कृतियाँ करो | Q (३) | Page 41

उत्तर लिखो :

कविता में प्रयुक्त पात्र

- _____
- _____

Solution: कविता में प्रयुक्त पात्र

१. युयुत्सु

२. अश्वत्थामा

३. वृद्ध

स्वयं अध्ययन [PAGE 41]

स्वयं अध्ययन | Q (१) | Page 41

'कर्म ही पूजा है', विषय पर अपने विचार सौ शब्दों में लिखो।

Solution: हर व्यक्ति की उसके परिवार, समाज व देश के प्रति कुछ जिम्मेदारियाँ व कर्तव्य होते हैं। इन कर्तव्यों का पालन करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्म व धर्म है। हमारे धार्मिक ग्रथों में भी धार्मिक गतिविधियों से अधिक कर्म को प्रधानता दी गई है। कर्म को योग अर्थात पूजा का एक

उत्तम प्रकार माना गया है। कहा जाता है कि जो व्यक्ति अपने कर्तव्यों से मुख मोड़कर ईश्वर की पूजा-पाठ में लीन हो जाता है, उसे ईश्वर भी स्वीकार नहीं करते हैं। गीता में स्वयं श्रीकृष्ण ने कर्म की महानता का बखान किया है। वास्तविकता यही है कि यदि हर व्यक्ति अपने-अपने कर्म को पूरी निष्ठा व ईमानदारी से करता है, तो वह किसी भी पूजा से बढ़कर है। जैसे– शिक्षक, किसान, चिकित्सक, कलाकार आदि अपने कर्तव्यों का निर्वहन ईमानदारी से करते हैं, तो उनके द्वारा किया गया कर्म ही पूजा कहलाता है।

स्वयं अध्ययन | Q (२) | Page 41

मैंने समझा

_____

_____

_____

Solution: मानव की उन्नति और अवनति दोनों उसी के हाथों में है। यदि वह चाहे तो सत्कर्मों से अपने जीवन को सफल बना सकता है और यदि चाहे तो गलत राह अपनाकर अपने जीवन को व्यर्थ कर सकता है।

उपयोजित लेखन [PAGE 41]

उपयोजित लेखन | Q (१) | Page 41

निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक दो।

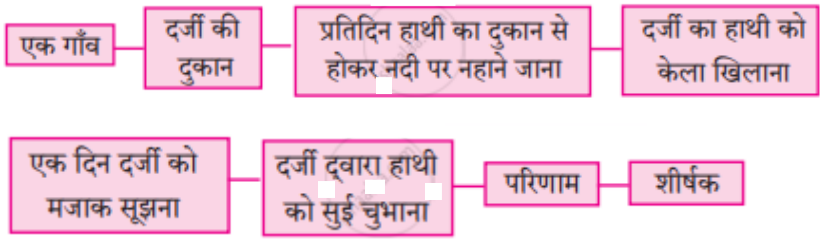

Solution:

जैसे को तैसा

रामपुर नाम का एक गाँव था। उस गाँव में भोला दर्जी की एक छोटी-सी दुकान थी। दुकान से थोड़ी दूर पर गाँव के किनारे एक नदी थी। गाँव के जमींदार राम सिंह के पास एक हाथी था। वह हाथी प्रतिदिन भोला दर्जी की दुकान से होकर नदी पर नहाने जाता था। दर्जी भी प्रतिदिन उस हाथी को दो-चार केले खिला देता था। हाथी व भोला दर्जी दोनों की यही दिनचर्या बन गई थी।

एक दिन हाथी अपने नियमित समय पर दुकान के पास पहुँचा। भोला ने जब हाथी को देखा,

तो उसे मजाक सूझा। उस दिन भोला ने हाथी को केला तो खिलाया, लेकिन उसकी सूँड़ में सुई भी चुभा दी। सुई हाथी की सूँड़ में ज्यादा चुभ गई थी और हाथी को दर्द भी हुआ, लेकिन उसने उस वक्त कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। वह उस समय दर्द से तड़पकर रह गया। उधर भोला दर्जी हँस-हँसकर लोटपोट हो गया। इस मजाक का परिणाम यह हुआ कि हाथी ने मन-ही-मन बदला लेने की ठान ली। उस दिन वह नदी पर गया और नहाने के बाद अपनी सूँड़ में नदी की गीली मिट्टी से युक्त गंदा पानी भरकर वापस लौटा। रास्ते में भोला दर्जी की दुकान के पास पहुँचकर वह रुक गया। भोला दर्जी उसे देखकर फिर जोर-जोर से हँसने लगा और उसके पास आया।

जैसे ही भोला उसके पास आया हाथी ने अपनी सूँड़ का सारा गंदा पानी उस पर और उसकी दुकान पर फेंक दिया। उस गंदे पानी से भोला का पूरा शरीर व दुकान गंदे हो गए।

गंदा कीचड़ उसकी दुकान में रखे कपड़ों पर पड़ गया था। इससे उसे नुकसान भी हुआ। अंतत: भोला को यह बात समझ में आ गई कि जैसा करेंगे, वैसा ही भरेंगे। उसने उसी दिन अपने कान पकड़ लिए और इस तरह की गलती कभी न करने का निश्चय किया।